हिन्दी भाषा का इतिहास

भारत में भाषा का विकास आर्यों के आगमन से माना जाता है। आर्यों के साथ जिस भाषा का विकास हुआ उसे संस्कृत कहते हैं। आर्य भारत में मध्य एशिया से सिंधु द्वार के द्वारा भारत के पंजाब प्रांत में बसे। संस्कृत से जिस भी भाषा का विकास हुआ उन्हें भारतीय आर्यभाषा कहते हैं। भारतीय आर्यभाषा को तीन भागों में बाँट कर पढ़ सकते हैं :–

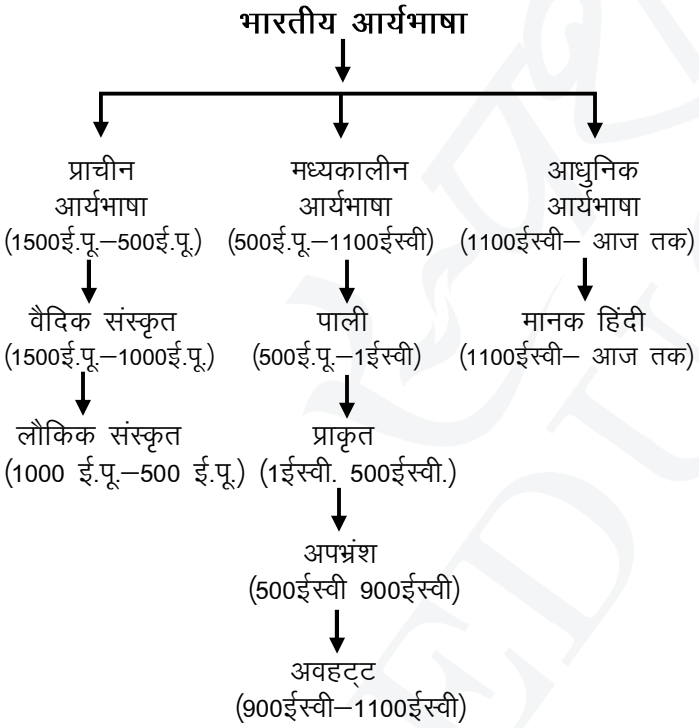

➢ **प्राचीन आर्यभाषा** :– मुख्यतः संस्कृत जो भारत में प्रचलित हुई उसी संस्कृत को प्राचीन आर्यभाषा कहा गया। इसको दो भागों में बाँटा जा सकता है –

- **वैदिक संस्कृत** :– मूल संस्कृत को वैदिक संस्कृत कहा गया तथा वैदिक संस्कृत में ही वेद पुराण उपनिषद् आदि की रचना की गई।
- **लौकिक संस्कृत** :– वैदिक संस्कृत का सरलतम रूप जो मौखिक था, लौकिक संस्कृत कहलाया तथा लौकिक संस्कृत में ही ग्रंथों की रचना की गई।

➢ **मध्यकालीन आर्यभाषा** :– मध्यकालीन आर्य भाषा को तीन भागों में बाँटा जा सकता है –

- **पाली** :– लौकिक संस्कृत का अपभ्रंश पाली भाषा को कहा गया। इसके जनक गौतम बुद्ध को माना जाता है।
- **प्राकृत** :– पाली के अत्यधिक सरल रूप को प्राकृत कहा जाता है। इसे गाँव की भाषा माना जाता है। इसके जनक महावीर जैन को माना जाता है।
- **अपभ्रंश** :– प्राकृत भाषा के बदले हुए रूप को अपभ्रंश कहा गया। आचार्य दंडी ने आभीर भाषा, स्वयंभू ने देसी भाषा, भरतमुनि ने अशुद्ध भाषा, चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने अपभ्रंश को पुरानी हिंदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्यिक पुरानी हिंदी कहा है।
  अपभ्रंश के प्रथम महाकवि स्वयंभू को कहा जाता है, **स्वयंभू को हिंदी का वाल्मीकि** भी कहा जाता है।
  - ✓ शौरसेनी – राजस्थानी, ब्रज, बुन्देली, कौरवी
  - ✓ मागधी – बिहारी, उड़िया, असमिया, बांग्ला, मणिपुरी
  - ✓ अर्द्धमागधी – अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
  - ✓ पैशाची – पंजाबी, लहंदा
  - ✓ ब्राचड़ – सिंधी
  - ✓ खस – गढ़वाली, कुमायुंनी, नेपाली
  - ✓ मराठी – मराठी
- **अवहट्ट** :– कुछ विद्वान अपभ्रंश को ही अवहट्ट मानते हैं।

➢ **आधुनिक आर्यभाषा** :– आधुनिक आर्यभाषा को तीन भागों में बाँटा गया है –

- **प्राचीन हिंदी** :– अपभ्रंश तथा प्राकृतनिष्ठ हिंदी को प्राचीन हिंदी कहा गया हिंदी का पहला महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो है जिसे चंदबरदाई लिखा था।
- **मध्यकालीन हिंदी** :– उर्दू निष्ठ हिंदी तथा अरबी–फारसी शब्दों से युक्त हिंदी को मध्यकालीन हिंदी कहा गया, जिसका प्रयोग भक्तिकाल में सर्वाधिक हुआ है।
- **आधुनिक हिंदी** :– आधुनिक हिंदी के रूप में संस्कृतनिष्ठ तथा उर्दुनिष्ठ दोनों प्रकार की हिंदी का प्रचलन था, लेकिन उर्दुनिष्ठ हिंदी के मानक रूप को प्रचलन में लाया गया, इसे ही आधुनिक हिंदी कहा गया है।

हिंदी भाषा बनने का सफर

वैदिक संस्कृत ⟶ संस्कृत ⟶ पाली ⟶ प्राकृत ⟶ अपभ्रंश ⟶ अवहट्ट ⟶ हिंदी भाषा।

- हिन्दी प्राकृत तथा अपभ्रंश के माध्यम से संस्कृत की सीधी वंशज है। यह द्रविड़ियन, तुर्की, फारसी, अरबी, पुर्तगाली और अंग्रेजी द्वारा प्रभावित व समृद्ध की गई है।

हिंदी भाषा

➢ हमारे देश की राजभाषा या मातृभाषा हिन्दी है। अधिकतर भारतीय भाषाएँ संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश से विकसित होती हुई वर्तमान रूप तक आए है। हिन्दी शौरसेनी अपभ्रंश और अर्धमागधी अपभ्रंश के संश्लेषण से निर्मित हुई है। आज हिन्दी भाषी क्षेत्रों के अंतर्गत उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, पंजाब का कुछ भाग, हिमाचल प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, इत्यादि आते हैं। इन क्षेत्रों में हिन्दी की पाँच उपभाषाओं के अंतर्गत आने वाली बोलियाँ लोक व्यवहार में आती है। इन्हें इस तालिका से समझा जा सकता है :—

हिन्दी की बोलियाँ

- पश्चिमी हिन्दी
  - खड़ीबोली (कौरवी)
  - ब्रजभाषा
  - हरियाणवी (बांगरू)
  - बुंदेली
  - कन्नौजी
- पूर्वी हिन्दी
  - अवधी
  - बघेली
  - छत्तीसगढ़ी
- राजस्थानी
  - पश्चिमी (मारवाड़ी)
  - पूर्वी (जयपुरी)
  - उत्तरी (मेवाती)
  - दक्षिणी (मालवी)
- बिहारी
  - भोजपुरी
  - मगही
  - मैथिली
- पहाड़ी
  - पश्चिमी — मंडियाली (हिमाचल प्रदेश)
  - मध्यवर्ती — कुमाऊँनी, गढ़वाली (उत्तराखंड)
  - नेपाली

➢ **पश्चिमी हिन्दी** :— पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत खड़ीबोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, बुन्देली, कन्नौजी बोलियाँ रखी गई हैं—

- **खड़ीबोली** :—

✓ भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा और वास्तविक अर्थों में जनभाषा हिन्दी है। वर्तमान में इसे खड़ीबोली कहा जाता है।

✓ ग्रियर्सन के भाषा वैज्ञानिक सर्वे के दौर में रामपुर, बिजनौर, सहारनपुर, मुरादाबाद होती हुई, यह खड़ीबोली मेरठ, देहरादून का मैदानी भाग, अम्बाला और पटियाला का पूर्वी भाग तथा ब्रजक्षेत्र और दिल्ली तक व्याप्त थी। यह प्रदेश प्राचीन काल में कुरु जनपद के अंतर्गत था, अतः इस बोली को कौरवी भी कहा जाता है।

✓ खड़ीबोली की प्रमुख विशेषताएँ —
यह ओकार बहुला बोली है। इसमें 'ओं' को 'ओं', 'है' को 'हे', 'ऐ' को 'ए', 'इ'को 'अ', 'न' को 'ण' बोला जाता है। जैसे— 'और' को 'ओर', 'बैठ' को 'बेठ', 'मिठाई' को 'मठाई', 'पानी' को 'पाणी'। इसमें 'अ' का लोप हो जाता है, जैसे 'अनाज' का 'नाज'। मूल व्यंजन का द्वित्व व्यंजन हो जाता है। जैसे— 'मोटी' को 'मट्टी', 'राजा' को 'राज्जा'।

- **ब्रजभाषा** :—

✓ ब्रजभाषा हिन्दी को अतिमहत्वपूर्ण इकाई रही है। लोक साहित्य भी इसी में लिखा जाता था। इसका प्राचीनतम् प्रयोग कवि गोपाल की 1587 ई. में लिखी 'रसविलास टीका' में मिलता है।

✓ ग्रियर्सन इसका क्षेत्र मथुरा, आगरा, मैनपुरी, अलीगढ़, बदायूँ, बरेली, गुडगाँव, जिले के पूर्वी पट्टी, भदावर, अंतर्वेद, बाँसवाड़ा, धौलपुर, भरतपुर इत्यादि मानते हैं।

✓ हिन्दी का मध्यकाल ब्रजभाषा का काल है। खासकर कृष्ण भक्त कवि सूरदास से लेकर अवधी में लिखने वाले तुलसीदास जैसे महान कवियों ने भी ब्रजभाषा में सा सृजन किया है।

✓ भक्तिकाल के अलावा रीतिकाल में भी ब्रजभाषा का साहित्यिक वर्चस्व बना रहा। बिहारी, देव, नंददास, भूषण, रसखान, बोधा, घनानन्द, रहीम, आलम इत्यादि बड़े कवियों ने ब्रजभाषा में ही साहित्य रचना की है।

✓ आधुनिक काल में गद्य की प्रमुखता के कारण ब्रजभाषा का प्रयोग कम हुआ। फिर भी आधुनिक काल के भारतेन्दु युग में भारतेन्दु सहित लगभग सभी कवि तथा द्विवेदी युग में हरिऔध मैथिलीशरण गुप्त, छायावादी में जयशंकर प्रसाद इत्यादि कवियों ने अपनी शुरुआती रचनाएँ ब्रजभाषा में ही लिखीं।

✓ ब्रजभाषा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—
आकारान्त → ओकारांत : घोड़ा(घोरो), भला (भलो)।
शब्द का अन्त इकारांत, उकारांत से— घर (घर), सब (सबु), कर (करि)।
ओकार बहुला बोली है— लेनो, देनो, भयो।
'क' को च – क्यों (च्यौं, चाँ)।
'ह' का लोप – बारह (बारा), साहूकार (साउकार)।
'ड़', 'ल' को र – साड़ी (सारी), घोड़ा (घोरा)।
न् को ल् – नम्बरदार (लम्बरदार)।

- **हरियाणी या हरियाणवी** :—

✓ दिल्ली, पंजाब के पश्चिमी भाग, हरियाणा के रोहतक, भिवानी, हिसार, पानीपत, करनाल, पटियाला, नामा, जींद, कुरुक्षेत्र तथा पचिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ आदि क्षेत्रों में बोली जाने वाली बोली हरियाणी या हरियाणवी कहलाती है।

✓ ग्रियर्सन ने इस बोली को बाँगरू नाम इसलिए दिया, क्योंकि बाँगरू का शाब्दिक अर्थ होता है, ऊँची भूमि यमुना के ऊँचे भाग में बोली जाने के कारण इसे बाँगरू के नाम से पुकारा जाने लगा।

✓ हरियाणवी की विशेषताएँ हैं—
न को ण – खाणा(खाना), गाणा (गाना)।
व्यंजन के स्थान पर द्वित्व – बेट्टी (बेटी)।
भूतकालिक क्रिया को वर्तमान क्रिया में बदल कर बोलना – राम स्कूल जा रेहया सै।(राम स्कूल गया)
सर्वनाम का प्रयोग— तन्नै (तुझं), म्हारे (हमार)।
क्रिया विशेषण का प्रयोग – इत (इधर) कद (कब)।

- **बुंदेली :**
  - ✓ बुंदेलखंड की बोली बुंदेली या बुंदेलखंडी है। यह शौरसेनी अपभ्रंश के दक्षिणी रूप से विकसित हुई है। बुंदेली का क्षेत्र मुख्य रूप से मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में स्थित नरसिंहपुर, जालौन, सिबनी, दमोह, झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, ग्वालियर, दतिया, ओरछा, बालाघाट, सागर, जबलपुर तथा होशंगाबाद तक फैला हुआ है। आदर्श बुंदेली, पंवारी, खटोला, लोधांती, कुंडारी, तिरहारी, बनाफरी, भदावरी, कुम्भारो एवं लोधी बुंदेली की बालयाँ हैं।
  - ✓ बुंदेली की विशेषताएँ निम्न हैं –
    ए को इ – बेटी (बिटिया), ड को रगड़ा (गरा)
    औ को ओ – और (ओर) स को छ – सीढ़ी(छोड़ी)
    क को ग – हकीकत (हकीगत)
- **कनौजी :**
  - ✓ देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली कन्नौजी दरअसल कन्नौज क्षेत्र की बोली है। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा इसे ब्रजभाषा की ही एक उपबोली पूर्व ब्रज की संज्ञा देते हैं। उचरूआ, भुक्सा, बुक्स, तिरहारी, इटाव, मंडोली, इटालो, पोलीभीत, शाहजहाँपुरी, बंगराही आदि कन्नौजी की उपवालियाँ बताई जाती हैं। मतिराम, बोरवल, भूषण, चिंतामणि आदि इस चोली के प्रमुख कवि हैं।
  - ✓ कन्नौजी की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं –
    महंगाई (म्हगाई), लहसुन (ल्हसुन), मैं (मई)।
    'इया' और 'वा' प्रत्ययों का प्रयोग – बच्चा (बचवा), लाल (ललवा), बेटा (बिटवा)।

➢ **पूर्वी हिन्दी की बोलियाँ :–**
पूर्वी हिन्दी का विकास डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार, मागधी अपभ्रंश से हुआ है। पूर्वी हिन्दी के अंतर्गत अवध, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी तीन बोलियाँ रखी गई हैं :–

- **अवधी :–**
  - ✓ अवधी का मुख्य केन्द्र अयोध्या है। अयोध्या से अवध' शब्द विकसित हुआ और इसी के आधार पर इस बोली को 'अवधी' को संज्ञा से अभिहित किया गया। अवधी का मुख्य केन्द्र लखनऊ, उन्नाव, बस्ती, रायबरेली, लखीमपुर, गौडा, बहाराइच, फैजाबाद, सीतापुर, बारबकी, हरदोई का कुछ भाग, इलाहाबाद, मिर्जापुर तथा जौनपुर हैं। अवधी की उपबोलियों की संख्या तेरह मानी गई है। इसे प्रायः नागर लिपि में लिखा जाता है। अवधी में साहित्य रचना पर्याप्त मात्रा में हुई है। इसके मुख्य कवि तुलसी, कुतवन, मंझन, जायसी, उस्मान आदि है। जायसी का कालजयी महाकाव्य 'पद्मावत' एवं तुलसीदास रचित 'रामचरित मानस' की रचना अवधी में हुई है।
  - ✓ अवधी की प्रमुख विशेषताएँ :
    'श', 'य' के स्थान पर 'स' का प्रयोग होता है।
    ए की ऊई – ऐसे (ऊइसे), औरत (ऊउरत)।
    ण को न – चरण (चरन)।
    य को ज – सुयश (सुजस)।
    व को ब – वाणी (बानी)।
    ड़ को र – लड़का (लरिका)।
- **बघेली :–**
  - ✓ बघेले राजपूतों की बसावट के आधार पर रीवों के आसपास का क्षेत्र बलखण्ड कहलाता है, और वहाँ की बोली बघेली है। वास्तव में रीवाँ, जबलपुर, दमोह, बालाबाट, बांदा, फतेहपुर और हमीरपुर का कुछ भाग बचेली का क्षेत्र है। कुछ लोग बोली को अवधी को एक उपबोली मानते हैं, परंतु कुछ लोग अचेलखड़ी और कुछ रीवाई भी कहते हैं। ग्रियर्सन ने चांग, भरवार का कुछ भाग, जिला मण्डल का कुछ भाग, दक्षिण मिर्जापुर का कुछ भाग तथा जबलपुर का कुछ भाग बघेली का प्रयोग क्षेत्र बताया है। बुंदेली, महोय, मरारी, कुम्मारी, ओझी, गोडवानी, तिरहारी आदि बघेली की उपयोलियाँ है।
  - ✓ बघेली की प्रमुख विशेषताएँ–
    ए को य – खेत (ख्यात)
    व को म – खिलावै (खिलौमै)
    गह को घ – जगह (जाघा)
    आ पर अनुनासिकता – चावल (चाँवल)।
- **छत्तीसगढ़ी :–**
  - ✓ छत्तीसगढ़ मुख्य क्षेत्र होने के कारण इस बोली का नाम छत्तीसगढ़ी पड़ा। इसका विकास अर्धमागधी अप्रभंश के दक्षिणी रूप से हुआ है। इस बोली पर नेपाली बंगला तथा उडिया का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
  - ✓ पूर्वी सम्भलपुर के आसपास के क्षेत्र में इसे 'लारिया के नाम से जाना जाता है। बालाघाट के लोग इसे खल्हार अथवा खलोटी भाषा भी कहते हैं।
  - ✓ बिलासपुर, सम्भलपुर, रायपुर, राजनंदगांव, खैरागढ़, काँकेर, सुरगुजा, कवर्धा, बालाघाट, बस्तर, सारंगढ़ तथा जशपुर में बोली जाती है।
  - ✓ इसकी प्रमुख बोलियाँ सदरी, कोरवा, बैगानी, सुरगुजिया, कलंगा. विझवाली सतनामी, काँकेरी, भुलिया, हलबी तथा बिलासपुरिया हैं। इसमें से बस्तर जिले में 'हलबी' का प्रयोग होता है।
  - ✓ ग्रियर्सन हलबी को मराठी की उपभाषा मानते हैं, किन्तु सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार यह छत्तीसगढ़ी की एक उपबोली है।
  - ✓ छत्तीसगढ़ी की प्रमुख विशेषताएं–
    ए. ऐ ओ औ के ह्रस्व रूपों का प्रयोग भी इस भाषा में किया जाता है।
    ब को प – शराब (सराप),
    स को छ – सीमा (छीमा),
    छ को स छीना (सीना),
    ष, श को स – शाबाश (साबास),
    त को द रास्ता (रसदा),
    क को ख – जिनकी (जिनखी)।

➢ **बिहारी बोलियाँ :–**

मागधी अपभ्रंश से बिहारी बोलियों का विकास हुआ है।

- **मगधी/मगही : –**
  - ✓ गया, पटना, मुंगेर, हजारीबाग, पलामू, राँची और भागलपुर जिले के कुछ भागों में बोली जाने वाली 'मगधी', 'मगही' भी कही जाती है। 'मगधी', 'मगही' का ही विकसित रूप है। इसकी लिपि कैथी तथा नागरी है, परंतु कहीं–कहीं पूर्वी मगही बंगला तथा उड़िया में भी लिखी जाती है।
- **मैथिली :–**
  - ✓ इस भाषा का प्रयोग मुजफ्फरपुर, मुंगेर, उत्तरी भागलपुर, पूर्वी चंपारन, पूर्णिया, दरभंगा, नेपाल के सरलारी, रौताहट, मौहतरी, सप्तरी तथा मोरंग में किया जाता है। इस बोली का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ 'वर्ण रत्नाकर' है, जो शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचित है। उमापति विद्यापति, महीपति आदि इस बोली के प्रमुख साहित्यकार हैं।
- **भोजपुरी :–**
  - ✓ भोजपुरी को कुछ लोग 'पूरबी' या 'भोजपुरिया' भी कहते हैं। बिहार के शाहबाद जिले के भोजपुर नामक कस्बे के नाम पर इस बोलों का नामकरण हुआ है। बिहार के सारन, शाहबाद, राँची, जसपुर, चम्पारन, पलामू का कुछ भाग, मुजफ्फरपुर का कुछ भाग, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर, मिर्जापुर, आजमगढ़, फैजाबाद, वाराणसी, सन्तकबीर नगर, महाराजगंज, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ गोरखपुर आदि जिलों में बोली जाती है।
  - ✓ इस बोली की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
    घोषीकरण – नकद (नगद),
    महाप्राणी करण – ठंडा (ठंढा)
    घोषीकरण – डिब्बा (डीवा), तवा (तावा),
    न को ल – नम्बरदार को लम्बरदार,
    इस बोली में संज्ञा के तीन रूप प्रचालित हैं– कुम्हार, कुम्हरा, कुम्हरवा,
    स्त्रलिंग के प्रत्यय– ई, नी, इया लुटिया, बिटिया, लाइकी, कुटिया आदि।
    ऐ का अइ – पैसा (पइसा),
    औ का अउ – गौना (गउना)
    देखा (देखल), सोया (सूतल), हमारा (हमार), तुम्हारा (तोहार), जाने देना (जाए दिहल), बैठ जाना (बइठे पावल) आदि।

➢ **राजस्थानी बोलियाँ :–**

राजस्थानी मुख्य रूप से राजस्थान की भाषा है। ग्रियर्सन ने राजस्थानी उपभाषा को पाँच बोलियों में विभाजित किया है पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी), उत्तर–पूर्वी राजस्थानी (मेवाती) मध्य पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी). दक्षिण–पूर्वी राजस्थानी (मालवी) तथा दक्षिणी राजस्थानी (निमाड़ी)। अधिकतर विद्वान राजस्थानों के अंतर्गत मारवाड़ी, मालवी, जयपुरी और मेवाती बोलियों को स्वीकार करते है। इन बोलियों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है–

- **मारवाड़ी :–**
  - ✓ मारवाड़ी मुख्य रूप से मारवाड़ मेवाड़, बीकानेर, जैसलमेर, पूर्वी सिंध, दक्षिणी पंजाब तथा उत्तर–पश्चिमी जयपुर में बोली जाती है। डिंगल वस्तुतः साहित्यिक मारवाड़ी है। यह नागरी लिपि में लिखी जाती है। साहित्यिक दृष्टि से यह बोली काफी समृद्ध है। मीराबाई इस बोली की सर्वप्रमुख रचनाकार है।
- **मालवी :–**
  - ✓ मालव प्रदेश अर्थात उज्जैन के आसपास के क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली मालवी शौरसेनी अपभ्रंश के उपनागर रूप से विकसित हुई है। इसे पहले आवन्ती भी कहते थे। आवन्ती का विकसित रूप हो वस्तुतः मालवी है। यह बोली मुख्यतः इन्दौर, देवास, रतलाम, होशंगाबाद, उज्जैन, भोपाल और आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है। मालवी की प्रमुख लिपि नागरी है, किन्तु महाजनी और मुड़िया प्रभावित भी नागरी का लेखन के लिए प्रयोग किया जाता है। चन्द्रसखी मालवी की प्रसिद्ध कवयित्री है।
- **जयपुरी :–**
  - ✓ जयपुरी बोली शौरसेनी अपभ्रंश के उपनागर रूप से विकसित है। ग्रियर्सन इसे मध्यवर्ती राजस्थानी कहते हैं। राजस्थान के लोग इस बोली को ढूंढाड़ी कहते हैं इसके दो अन्य नाम हैं– झाड़साही बोली और काई कुई की बोली। यह जयपुर के अतिरिक्त किशनगढ़, इंदौर, अलवर के अधिकांश भाग, अजमेर और मेरवाड़ा के उत्तर–पूर्वी भाग में बोली जाती है। दादू पंथ का कुछ साहित्य इस बोली में मिलता है।

➢ **पहाड़ी हिन्दी की बोलियाँ :–**

पहाड़ी प्रदेश अर्थात् हिमालय की तराई में स्थित पर्वत श्रृंखलाओं में बोली जाने वाली पहाड़ी मिश्रित हिन्दी पूर्वी पहाड़ी, पश्चिमी पहाड़ी और मध्य पहाड़ी इन तीन भागों में इस बोली को विभाजित किया गया है :–

- **पश्चिमी पहाड़ी :–**
  - ✓ कुल्लू, मण्डी, शिमला, चम्पा और लाहुल–स्पिति के आसपास का क्षेत्र अर्थात् पंजाब के उत्तरी–पूर्वी पहाड़ी प्रदेश में यह बोली प्रचलित है।
- **मध्यवर्ती पहाड़ी :–**
  - ✓ **गढ़वाली** : मुख्यतः गढ़वाल प्रदेश में बोली जाने वाली गढ़वाली है। अल्मोड़ा, टिहरी, सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, हरिद्वार और इसके आसपास का क्षेत्र अर्थात केदार खण्ड मध्यकाल में बहुत से गढ़ों का प्रदेश होने के कारण गढ़वाल कहलाया।
  - ✓ **कुमायूँनी** : कुमायूँ क्षेत्र, जो माध्यमिक पहाड़ी क्षेत्र कहलाता है, के आसपास बोली जाने वाली बोली कुमायूँनी है। कुमायूँ शब्द का संबंध कुमांचल या कूर्मांचल से है। इस बोलों का प्रयोग नैनीताल, पिथौरागढ़, चमोली, उत्तरकाशी आदि जिलों में किया जाता है।